एक इंसान हूं...बस।

सीता!
सावित्री!
द्रौपदी!
अनसुइया!
नहीं...मैं
इनमें से
कोई नहीं
मैं एक
औरत हूं
एक इंसान
अपने युग की
समस्याओं से
जूझती हुई
लक्ष्मण रेखाओं को
नकारती हुई
पिंजड़ों को
तोड़ती हुई
तड़फड़ाती,
कशमशाती
उड़ जाने को
बेताब
एक लहूलुहान
इंसान..।

मणिमाला